IA-2 Paper-2 Date 05/11/2024

Dr Raj Gopal
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन

(1.) बुद्धिवाद
* देकार्त
* स्पिनोजा
* लाइबनिज

(2.) अनुभववाद
* लॉक
* बर्कले
* ह्यूम

(3.) समीक्षावाद
* कॉन्ट

(1.) बुद्धिवाद (Rationalism) :⇒ बुद्धिवाद वह ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार यथार्थ ज्ञान का साधन बुद्धि (Reason) और सिर्फ बुद्धि है। इस मत के समर्थक दार्शनिक देकार्त स्पिनोजा लाइबनिज हैं। बुद्धिवादियों के अनुसार यथार्थ ज्ञान के दो प्रमुख लक्षण हैं। - सार्वभौमिकता तथा अनिवार्यता। यहाँ सार्वभौमिकता से तात्पर्य वह ज्ञान प्रत्येक देश, काल परिस्थिति में यथार्थ होता है। तथा अनिवार्यता का अर्थ है उस ज्ञान की सत्यता का निराकरण नहीं किया जाता है। जैसे - 2+2=4, यह कथन सार्वभौम तथा अनिवार्य ज्ञान का उदाहरण है। इस प्रकार से बुद्धिवादी गणित के ज्ञान को आदर्श ज्ञान मानते हैं।

बुद्धिवाद का मानना है कि हमारे मन के अंदर कुछ जन्मजात प्रत्यय (Innate Idea) हैं, जिनके अंदर बीज रूप में समस्त ज्ञान निहित है। सिर्फ इन्हें प्रस्फुटित तथा विकसित कर देने पर सार्वभौम तथा अनिवार्य ज्ञान का विशाल वृक्ष तैयार हो जाता है। प्रस्फुटन या विकास का यह काम गणित या खासकर रेखागणित में प्रयुक्त निगमनात्मक विधि द्वारा संपन्न होता है। इस प्रकार से बुद्धिवादी निगमन को ज्ञान प्राप्ति का साधन मानते हैं।

बुद्धिवाद के सामान्य लक्षण निम्न हैं। -

(i) यथार्थ ज्ञान साधारण दैनिक ज्ञान से भिन्न है। वही ज्ञान यथार्थ है जो सार्वभौम तथा अनिवार्य होता है।

(ii) ज्ञान का विषय संसार के अस्थाई और परिवर्तनशील तथ्य नहीं है, बल्कि कुछ वैसे सत्य जो मूलभूत तथा शाश्वत हैं।

(iii) वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति मानव बुद्धि से होती है, बुद्धि के अलावा अन्य कोई साधन नहीं है।

Scanned with CamScanner

(iv) अनुभव से भी ज्ञान प्राप्त होता है अ ज्ञान को यथार्थ ज्ञान नहीं कहा जा सकता है। यह ज्ञान संदेहात्मक तथा भ्रमात्मक होता है।

(v) समस्त ज्ञान संभावना बीज रूप में बुद्धि में जन्म से ही मौजूद रहता है। बुद्धि के बनावट में ही ज्ञान के मूलभूत आधार मौजूद हैं।

(vi) ज्ञान की पद्धति निगमनात्मक होती है। इस निगमनात्मक पद्धति के द्वारा ही बुद्धि के अंदर बीज रूप निहित ज्ञान प्रस्फुटित एवं विकसित होता है।

(2.) अनुभववाद (Empiricism) :⇒ अनुभववाद वह ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार ज्ञान का एकमात्र साधन इन्द्रियानुभूति है। मानव मन में कोई भी प्रत्यय जन्मजात नहीं होता है। समस्त ज्ञान जन्म लेने के पश्चात अनुभव द्वारा उत्पन्न और विकसित होता है। ये मानव मन की तुलना रिक्त स्लेट, कोरी पार्टी, सफेद कागज आदि से करते हैं। ये ज्ञान का आदर्श गणित को न मानकर तथ्यात्मक विज्ञान को मानते हैं। अनुभव से केवल विशेषों का ही ज्ञान हो सकता है। विशेषों के ज्ञान के आधार पर आगमनात्मक पद्धति के द्वारा सामान्य नियम की स्थापना की जाती है। ये आगमन को ज्ञान प्राप्ति का साधन मानते हैं। अनुभववाद के मुख्य लक्षण निम्न हैं।

(i) दैनिक जीवन में जो विशेष वस्तुओं का ज्ञान होता है वह अयथार्थ नहीं है, बल्कि वह वास्तविक ज्ञान है।

(ii) ज्ञान का मूल और एकमात्र स्रोत अनुभव है और अनुभव का अर्थ इन्द्रियानुभव।

(iii) मन में कोई प्रत्यय जन्मजात नहीं होता है, जो भी प्रत्यय मन में होता है, वह अनुभव के द्वारा प्राप्त होते हैं।

(iv) ज्ञान में मन प्रारंभ से निष्क्रिय नहीं रहता है, बल्कि प्रारम्भ में तो वह एक बिल्कुल निष्क्रिय रूप में संवेदनाओं को ग्रहण करता है।

(v) ज्ञान के मौलिक तत्व प्रत्यय हैं जो अनुभव से प्राप्त किये जाते हैं।

Scanned with CamScanner